अंधों में काना राजा

(रायगढ़ इप्टा के बाल-कलाकारों द्वारा इंप्रोवाइज़्ड नाटक)

(रायगढ़ में हमारे घर के पिछले हिस्से में एक कथावाचक शंकर जी रहते थे। वे गाँव-गाँव जाकर अनेक प्रकार के पूजा-पाठ किया करते थे और कथा बाँचते थे। यही उनकी आजीविका थी। वे अनेक लोककथाओं को लोकशैली में पूरे हावभाव और लय के साथ सुनाया करते थे। यह नाटक उनके द्वारा सुनाई गई कहानी का ही इंप्रोवाइज़्ड रूप है। अजय ने बच्चों को यह कहानी सुनाई और बच्चों ने अपनी रुचि और समझ के आधार पर इसके संवाद गढ़े और कहानी के दृश्य तैयार किए थे। चूँकि यह कार्यशाला में तैयार किया गया नाटक था, इसलिए सभी प्रतिभागियों को कोई न कोई भूमिका मिले और वे ज़्यादा से ज़्यादा देर तक मंच पर रहकर सभी घटनाओं में हिस्सा ले सकें, इसलिए काफ़ी नामहीन पात्र इसमें हैं। यह नाटक आज बहुत ढीला-ढाला और बचकाना लग सकता है, मगर उस समय जो बच्चे इसका मंचन करते थे, उन्हें और जिन बाल-दर्शकों के सामने यह प्रस्तुत किया जाता था, उन्हें भी इसमें प्रयुक्त दोहरावों में बहुत मज़ा आता था। बाल-कलाकार हर बार नए-नए तरीक़े से हरेक चमत्कार को इंप्रोवाइज़ करते थे। उसमें एक प्रकार का ताज़ापन हमेशा बना रहा।

इप्टा रायगढ़ की वार्षिक पत्रिका 'रंगकर्म' के 2005 में प्रकाशित 'बाल रंगकर्म विशेषांक' के लिए अजय ने इसे शब्दबद्ध किया था, जिसे मैंने थोड़ा संपादित किया है।)

दृश्य एक

(कोरस गाते हुए आता है)

अंधों में काना राजा अंधों में
अंधों में काना राजा अंधों में
अंधों में काना राजा अंधों में
अंधों में काना राजा
अंधों में काना राजा
काना राजा काना राजा
काना राजा काना राजा

(गाते-गाते गाँव की सुबह का दृश्य बनता है। कुछ बच्चे दातून कर रहे हैं, कुछ कंचा-बाटी खेल रहे हैं, कुछ पतंग उड़ा रहे हैं। कुछ लड़कियाँ बिल्ला खेल रही हैं और कुछ पानी भरने जा रही हैं। एक ओर से पंडित का प्रवेश। वह नदी में नहाने लगता है। दो आवारा लड़कों का प्रवेश, जो अन्य लड़कों को धमका-चमका रहे हैं, मारपीट कर रहे हैं। पानी भर रही लड़कियों को देखकर सीटी बजाते हुए प्रस्थान करते हैं। इस बीच पंडित स्नान कर घर की ओर जाने लगता है। अचानक खेल रहे एक बच्चे से टकराता है। लड़कों के समूह पर ज़ोर से झल्लाता है - 'धरम भ्रष्ट कर दिया ससुरों ने, चलो भागो यहाँ से!' आगे बढ़ता है। बच्चों के दूसरे समूह के पास पहुँचता है। उसमें से एक बच्चा चिढ़ाता है)

बच्चा : क्यों पंडित जी, फिर से नहाने नहीं जाएँगे?

पंडित : चुप कर ससुरे! एक झापड़ लगाएँगे खींचकर! (मारने के लिए बच्चे के पीछे दौड़ता है। बच्चे भाग जाते हैं। पंडित आगे बढ़ता है। दो लड़के पतंग उड़ा रहे हैं। अचानक पंडित के गले में मंजा फँस जाता है, उसे चोट लगती है। पंडित चीखता है।) उई ...मार दिया रे ... काट दिया रे ... (गुस्से से पतंग की डोर को तोड़कर फेंक देता है। बच्चे ज़ोर-ज़ोर से रोने लगते हैं। पंडित उन पर चिल्लाता है) चलो भागो यहाँ से! (बच्चों का रोते-रोते प्रस्थान। पंडित बड़बड़ाते हुए चला जाता है)

दृश्य दो

(पंडित का घर। पंडित घर में सोया हुआ है। पंडिताइन का घड़ा लेकर प्रवेश। एक कोने में घड़ा रखकर पंडित को देखती है और झल्लाकर कहती है)

पंडिताइन : अरे, अभी-अभी तो नहाकर आए हो और फिर सो गए। कुछ काम-धाम नहीं है क्या?
पंडित : अरी भागवान! बड़ी भूख लगी है, इसलिए नींद आ गई। कुछ खाने के लिए दो।
पंडिताइन : (झल्लाकर) अरे, कहाँ से दूँ ख़ाना? घर में अन्न का एक दाना नहीं है। जाओ कुछ लेकर आओ।
पंडित : अरी पंडिताइन, आजकल कोई पूजा-पाठ नहीं कराता और दक्षिणा भी ठीक से नहीं देता। सब बड़े पंडाल वाले बाबाओं के पास जाते हैं। धरम-करम से विश्वास उठ गया है लोगों का।
पंडिताइन : मगर कुछ तो कमाकर लाना ही पड़ेगा।
पंडित : मैं और क्या काम कर सकता हूँ? कहाँ से कमाकर लाऊँ?
पंडिताइन : कुछ नहीं तो जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाओ और उन्हें बेचो।
पंडित : (हताशा से) ठीक है, लाओ कुल्हाड़ी दे दो।
पंडिताइन : ये लो। (भीतर से उसे कुल्हाड़ी लाकर देती है) और सुनो, आज अगर खाने के लिए कुछ नहीं लाए तो ख़ाना नहीं पकेगा, कह देती हूँ।

(पंडिताइन का प्रस्थान)

दृश्य तीन

(पंडित हाथ में कुल्हाड़ी लेकर मंच का एक चक्कर लगाता है। अचानक एक ओर से दो ग्रामीण आते हैं)

ग्रामीण एक : (हाथ जोड़कर) पंडित जी राम राम!
पंडित : खुश रहो, खुश रहो।
ग्रामीण दो : पंडित जी, कहाँ चले कुल्हाड़ी लेकर?
पंडित : (झेंपते हुए) यूँ ही ज़रा जंगल की ओर जा रहा था लकड़ी काटने।

(आगे बढ़ता है। ग्रामीण उसकी पीठ पीछे ताना कसता है)

ग्रामीण एक : अरे, ये आलसी कब से काम करने चला!
पंडित : चुप रहो ससुर के नाती!

(उनको दौड़ाता है। कुछ दूर जाकर दोनों पात्र 'फ़्रिज़' हो जाते हैं। दूसरी विंग से अन्य दो ग्रामीणों का प्रवेश)

ग्रामीण तीन : पंडित जी, राम राम! सुबह-सुबह कहाँ चले?
पंडित : ज़रा जंगल जा रहा हूँ लकड़ी काटने।
ग्रामीण चार : क्यों भला? क्या आजकल गाँववालों ने दक्षिणा देना बंद कर दिया?
पंडित : (भड़ककर मारने दौड़ते हैं) ससुरे! शर्म नहीं आती! हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो? श्राप दे दूँगा।

(पंडित आगे बढ़ता है। दोनों ग्रामीण 'फ़्रिज़' हो जाते हैं। अन्य और दो ग्रामीणों का प्रवेश)

ग्रामीण पाँच : राम राम पंडित जी!
पंडित : राम राम।
ग्रामीण छह : इतनी सुबह-सुबह कुल्हाड़ी लेकर कहाँ जा रहे हैं?
पंडित : यूँ ही ज़रा जंगल की ओर जा रहा था काम से।
ग्रामीण पाँच : पंडित जी और काम? कब से?
पंडित : (चिढ़कर) ससुरों, मेरा मज़ाक़ उड़ाते हो, अभी बताता हूँ!

(दौड़ाता है। थोड़ी दूर जाकर वे भी 'फ़्रिज़' हो जाते हैं। छहों एक साथ अपनी-अपनी जगह से पूछते हैं)

सभी ग्रामीण : (एक साथ) पंडित जी, राम राम! कहाँ चले?
पंडित : (गुस्से से भरकर) कहीं भी जाऊँ, तुम लोगों को क्या? मज़ाक़ बना रखा है सुबह से! भागो यहाँ से।

(दौड़ाते हैं। आगे-आगे ग्रामीण और पीछे-पीछे पंडित मंच का एक चक्कर लगाते हैं। ग्रामीण अलग-अलग जगह पर 'फ़्रिज़' हो जाते हैं। पंडित का गुस्से में भरकर प्रस्थान)

दृश्य चार

(सभी ग्रामीण 'फ़्रिज़' अवस्था से बाहर निकलकर गीत गाते हुए, नृत्य करते हुए पेड़ बन जाते हैं।)

अंधों में काना राजा, अंधों में
अंधों में काना राजा, अंधों में ...

(पंडित का प्रवेश। हरेक पेड़ को देखता है। एक-दो मोटे पेड़ों को देखकर कहता है - 'अरे, यह तो बड़ा मोटा है!' अंत में एक लंबे और पतले पेड़ के पास पहुँचता है।)

पंडित : हाँ, ये पेड़ दुबला-पतला है। इसे ही जल्दी से काटकर इसका गठ्ठर बनाकर बाज़ार में बेच आता हूँ।

(कहकर जैसे ही कुल्हाड़ी उठाकर काटने के लिए बढ़ता है। पतला पेड़ कराह उठता है - आ ssह! प्रतिध्वनि स्वरूप अन्य पेड़ भी कराह उठते हैं - आ ssह!)

पंडित : (आवाज़ सुनकर हड़बड़ा जाता है। पेड़ों के इर्दगिर्द घूमकर देखते हुए पूछता है) कौन है? ... कौन है? (कोई नहीं दिखता तो पेड़ पर कुल्हाड़ी चलाता है। फिर कराहने की आवाज़ आती है। चौंककर फिर से पूछता है) कौन है? (किसी के न दिखने पर फिर कुल्हाड़ी

उठाता है)

वृक्षराज : ठहरो, मुझे मत काटो।

पंडित : कौन हो तुम?

वृक्षराज : मैं हूँ वृक्षराज! मुझे क्यों काटना चाहते हो?

पंडित : मेरे यहाँ खाने के लिए दाना नहीं है। तुम्हें काटकर बाज़ार में लकड़ियाँ बेचूँगा, उससे अनाज ख़रीदकर घर ले जाऊँगा।

वृक्षराज : ठहर जाओ, मुझे मत काटो।

पंडित : नहीं, मैं तो तुम्हें काटूँगा।

वृक्षराज : अगर तुम मुझे नहीं काटोगे, तो मैं तुम्हें एक ऐसी थाली दूँगा, जिससे तुम जो चाहोगे, वही मिलेगा। बोलो, अब तो तुम मुझे नहीं काटोगे?

पंडित : पहले थाली दो। (वृक्षराज थाली देता है) लेकिन मैं जो माँगूंगा, वह नहीं मिलेगा तो?

वृक्षराज : वन ईयर की 'रिप्लेसमेंट गारंटी' है।

पंडित : एक के साथ एक फ्री नहीं है क्या?

वृक्षराज : इतना लालच ठीक नहीं!

पंडित : चलो ठीक है, एक ही सही। (पंडित का थाली लेकर प्रस्थान)

(पेड़ बने पात्र 'अंधों में काना राजा' गाते हुए ग्रामीणों का समूह बनाते हुए फैल जाते हैं।)

दृश्य पाँच

(गाँव का दृश्य। कोई खेल रहा है, कोई गप्प लड़ा रहा है, कोई कुछ काम कर रहा है। पंडित का प्रवेश। एक व्यक्ति उन्हें देखकर ज़ोर से पुकारता है।)

व्यक्ति : राम राम पंडित जी!

पंडित : राम राम भैया।

व्यक्ति : ये थाली लेकर कहाँ जा रहे हैं पंडित जी? भिक्षा माँगने?

पंडित : अरे भिक्षा माँगे तेरी नानी!

(आगे बढ़ जाता है। दूसरा व्यक्ति टोकता है)

व्यक्ति दो : अरे पंडित जी, ये सड़ी-सी थाली लेकर कहाँ जा रहे हैं?

पंडित : (मुस्कुराकर) अरे तुम लोग क्या जानो इस थाली के बारे में! (आगे बढ़ता है)

व्यक्ति तीन : भिक्षा मिली नहीं क्या पंडित जी?

पंडित : हम भिक्षा क्यों माँगें? हम तो मेहनत करके खाते हैं।

(पंडित का प्रस्थान। अचानक कुछ लोगों में झगड़ा होता है और दो-तीन लोग भागते हुए भीतर जाते हैं। उनके पीछे सभी लोगों का शोर मचाते हुए प्रस्थान)

दृश्य छह

(पंडिताइन का चिंता में डूबकर प्रवेश।)

पंडिताइन : (सिर ठोंकते हुए) सुबह से शाम होने को आई, पर पंडित जी का पता नहीं। घर में अनाज का दाना नहीं है। मेरा तो भूख के मारे हाल बेहाल हो रहा है।

(पंडित का गुनगुनाते हुए प्रवेश)

पंडित : ला ला ला ला ला ला ssss

पंडिताइन : (उसे देखकर बिफरते हुए) अरे कुछ कमा-धमाकर भी लाए हो या सिर्फ़ ला ला ला कर रहे हो?

पंडित : (हँसते हुए) अरी भागवान, आज तो मैं ये कमाकर लाया हूँ। ये ... (थाली दिखाता है)

पंडिताइन : ये सड़ी-सी थाली?

पंडित : ये सड़ी नहीं, करामाती थाली है, करामाती थाली।

पंडिताइन : हे भगवान! कहीं भाँग-वाँग तो पीकर नहीं आए?

पंडित : अरे नहीं पंडिताइन, मैं पूरे होश में हूँ। अरे, जो करे अपनी बीवी से प्यार, वो कैसे करे इस करामाती थाली से इनकार!

पंडिताइन : हे भगवान! लगता है ये तो पूरे पागल हो गए हैं! (ज़ोर से रोने लगती है)

पंडित : चुप्प ... देखना है इसका कमाल, तो हो जाओ तैयार! बोलो, क्या चाहिए?

पंडिताइन : बड़े ज़ोर से भूख लगी है, सबसे पहले ख़ाना खिला दो।

पंडित : ठीक है। आँखें बंद कर। (दोनों आँखें बंद करते हैं। थाली को सामने रखकर पंडित मंत्र पढ़ता है 'ओऽम थाली देवता प्रसन्न हो') हे थाली देवता! इस थाली को स्वादिष्ट पकवानों से भर दे! (थाली पकवानों से भर जाती है। दोनों आँखें खोलते हैं और देखकर चौंक जाते हैं।)

पंडिताइन : अरे बापरे! इतने सारे पकवान! ये थाली तो सचमुच करामाती है।

पंडित : क्यों, मैं कह रहा था तो विश्वास नहीं हो रहा था? कहती थी, भाँग पीकर आए हैं, पागल हो गए हैं!

पंडिताइन : नहीं जी, गलती हो गई जी, मुझे माफ़ कर दो। चलो चलो, इस थाली और पकवानों को भीतर छुपाकर रख देते हैं। आजकल चोर-उचक्कों का क्या भरोसा?

पंडित : हाँ हाँ, चलो। (दोनों का प्रस्थान)

दृश्य सात

(गाँव का दृश्य। दो व्यक्ति नहा रहे हैं। दो बैठकर दातून घिस रहे हैं।)

व्यक्ति एक : अरे यार रामू, कल तो ग़ज़ब हो गया! मेरे यहाँ अपने-आप दो थाली पकवान आए।

व्यक्ति दो : अरे मेरे यहाँ भी दो थाली आए। (कुल्ला करके थूकता है)

व्यक्ति तीन : (नहाते हुए चिल्लाता है) अबे, देखता नहीं, हम लोग नहा रहे हैं, पानी में थूकता है!

व्यक्ति चार : अबे, दो थाली पकवान क्या आ गए, अपने को लाट साहब समझता है? दो थाली पकवान तो हमारे यहाँ भी आए हैं।

व्यक्ति एक : क्या तुम लोगों के यहाँ भी दो थाली पकवान?

व्यक्ति चार : हाँ भई।

(व्यक्ति तीन और चार नहाकर चले जाते हैं। व्यक्ति एक और दो भी उठते हैं और चलते-चलते बात करते हैं)

व्यक्ति एक : अरे, गाँव में ये क्या हो रहा है?

(अचानक देखता है कि दो व्यक्ति पेट पकड़कर दौड़े हुए चले आ रहे हैं। व्यक्ति एक रोककर पूछता है)

व्यक्ति एक : सुबह-सुबह इतनी हड़बड़ी में कहाँ जा रहे हो?
व्यक्ति पाँच : क्या बताएँ, रात से पेट ख़राब है, ज़रा जंगल जा रहे हैं।
व्यक्ति दो : अरे क्या हो गया?
व्यक्ति छह : क्या बताएँ भैया, रात को हमारे यहाँ अपने-आप दो थाली पकवान आए। हम लोगों ने खूब खाए, मगर पेट ख़राब हो गया। (दोनों भागने लगते हैं)
व्यक्ति एक : (उन्हें रोकते हुए) क्या तुम्हारे यहाँ भी दो थाली पकवान आए?
व्यक्ति पाँच : हाँ हाँ, अभी तो जाने दो। (भाग जाते हैं)
व्यक्ति दो : अरे, गाँव में ये क्या हो रहा है? (दोनों आश्चर्य व्यक्त करते हुए चले जाते हैं)

(तीन औरतें अलग-अलग दिशा से आती हैं और पानी भरने लगती हैं। परस्पर बात करती हैं।)

औरत एक : अरे बहन, कल तो ग़ज़ब हो गया! हमारे घर दो थाली पकवान अपने-आप आ गए।
औरत दो : हमारे यहाँ भी आए।
औरत तीन : और हमारे यहाँ भी। (पंडिताइन का प्रवेश)
तीनों : राम राम पंडिताइन।
पंडिताइन : राम राम। और सुनाओ क्या हालचाल है?
औरत एक : अरी पंडिताइन क्या बताऊँ, कल हमारे घर दो थाली पकवान अपने-आप आ गए।
पंडिताइन : (चौंककर) दो थाली कि एक थाली?
औरत दो : अरे दो थाली! क्यों, क्या तुम्हारे घर एक ही थाली आए?
पंडिताइन : नहीं नहीं, मैं तो यूँ ही पूछ रही थी।

(पंडिताइन सोचते हुए जल्दी-जल्दी पानी भरती है। सबका प्रस्थान।)

दृश्य आठ

पंडिताइन : (घर में घुसते हुए) सुनते हो जी!
पंडित : (प्रवेश करते हुए) क्या हुआ?
पंडिताइन : कुछ नहीं, तुम जल्दी से करामाती थाली लेकर आओ।
पंडित : अरी भागवान, अभी तो कल के ही पकवान ख़तम नहीं हुए हैं। अब थाली का क्या करोगी?
पंडिताइन : तुम पहले थाली तो लेकर आओ।
पंडित : ठीक है (थाली लेकर आता है) लो यह थाली।
पंडिताइन : अब मंत्र बोलो।
पंडित : 'ओऽम थाली देवता प्रसन्न हो!' (दोनों हाथ जोड़कर आँखें बंद करते हैं) बोलो, क्या चाहिए?

पंडिताइन : अब इस थाली से कहो कि एक थाली सोने की मुहरें दे।
पंडित : अरे इतनी मुहरों का तुम क्या करोगी?
पंडिताइन : तुम माँगो तो सही!
पंडित : हे थाली देवता, हमें एक थाली सोने की मुहरें दे दो।

(आँखें खोलते हैं। चकित हो जाते हैं)

पंडिताइन : अहा! मज़ा आ गया। चलो जी, इसे भीतर रख आते हैं। चोर-उचक्कों का कोई भरोसा नहीं है।
पंडित : हाँ हाँ चलो। (दोनों का प्रस्थान)

दृश्य नौ

(दो-दो के जोड़ों में युवकों का प्रवेश)

लड़का एक : अबे कहाँ जा रहा है?
लड़का दो : अरे यार, शहर जा रहा हूँ। मालूम, रात को हमारे घर में दो थाली सोने की मुहरें आईं।
लड़का तीन : हमारे यहाँ भी दो थाली सोने की मुहरें आईं हैं।
लड़का चार : यार, मैं तो एक वैन ख़रीदूँगा।
लड़का एक : मैं तो बी एम डब्लू ख़रीदूँगा।
लड़का दो : अबे, गाँव में क्या बी एम डब्लू चलाएगा?
लड़का तीन : इससे अच्छा तो एक ट्रेक्टर ख़रीद ले।
लड़का चार : ठीक है यार! मैं महिंद्रा का ट्रेक्टर ख़रीद लेता हूँ।
लड़का एक : चलो जल्दी, वरना शो रूम बंद हो जाएगा।

(सभी जाते हैं। दूसरी ओर से दो आदमी भीख माँगते हुए आते हैं)

'अल्ला के नाम पे दे दे, ईश्वर के नाम पे दे दे ...'

(दो व्यक्ति आते हैं। एक व्यक्ति उनके हाथ में एक सोने की मुहर देकर कहता है)

व्यक्ति एक : ले! तू भी क्या याद करेगा!
भिखारी एक : (भिखारी दो से) देख तो यार, कहीं ये वही सोने की मुहर तो नहीं?
भिखारी दो : हाँ यार, ये तो वही मुहर है।
भिखारी एक : (फेंकते हुए) अरे रख लो तुम ही, ऐसी सोने की मुहरें तो हमारे यहाँ भी दो-दो थाली पड़ी हुई हैं। (चले जाते हैं)
व्यक्ति दो : (पहले से) चल यार, अब तो गाँव के भिखारियों के भी रुतबे बढ़ गए हैं। (दोनों जाते हैं)

(तीन महिलाएँ आकर एक तरफ़ बैठकर चावल फटकने लगती हैं। पंडिताइन का प्रवेश)

महिला एक : राम राम पंडिताइन।
पंडिताइन : राम राम बहना। अरे ये क्या! ये सब काम तुम्हें करने पड़ रहे हैं? नौकर-चाकर कहाँ

गए?

महिला दो : क्या बताएँ पंडिताइन, जब से गाँव में सबको दो-दो थाली सोने की मुहरें मिली हैं, नौकरों ने काम करना ही छोड़ दिया है।

पंडिताइन : (चौंककर) दो-दो थाली या एक थाली?

महिला एक : दो-दो थाली बहना। क्या तुम्हारे यहाँ एक ही थाली मिली?

पंडिताइन : नहीं नहीं, मैं तो यूँ ही कह रही थी।

(सभी का अपना-अपना सामान उठाकर प्रस्थान)

दृश्य दस

(पंडिताइन घर आती है)

पंडिताइन : (चिल्लाते हुए) सुनते हो? अजी सुनते हो?

पंडित : अरे क्या है भागवान, आ रहा हूँ। (आकर) क्या हो गया?

पंडिताइन : क्यों जी, ये सब क्या हो रहा है?

पंडित : क्या हो गया?

पंडिताइन : अरे, जब हम लोगों को एक थाली पकवान मिला, तो गाँववालों को दो-दो थाली पकवान मिला और जब हम लोगों को एक थाली सोने की मुहरें मिलीं, तो गाँववालों को दो-दो थाली मिलीं। ये सब क्या हो रहा है?

पंडित : अरे, मैं तो तुम्हें ये बताना ही भूल गया था। वृक्षराज ने मुझसे कहा था कि इस थाली से जो भी माँगोगे, वो तो तुम्हें मिलेगा, मगर उससे दुगुना तुम्हारे गाँववालों को मिलेगा।

पंडिताइन : और तुमने मान लिया?

पंडित : तो?

पंडिताइन : तुम तो निरे बुद्धू के बुद्धू ही हो। अरे ऐसे वरदान का क्या फ़ायदा, जिससे हमसे दुगुना हमारे गाँववालों को मिले!

पंडित : अरी भागवान, हमें दूसरों से क्या लेना-देना? हमें जो चाहिए, वो तो हमें मिल रहा है न!

पंडिताइन : तुम नहीं समझोगे। बुद्धू के बुद्धू ही रहोगे। जाओ, थाली लेकर आओ।

पंडित : अरे, पकवान तो अभी तक रखे हैं और सोने की मुहरें भी पड़ी हुई हैं, अब तुम्हें और क्या चाहिए?

पंडिताइन : तुम नहीं समझोगे। जाओ, पहले तुम थाली लेकर आओ।

पंडित : अच्छा बाबा, लाता हूँ। (लाता है) ये लो।

पंडिताइन : अब मंत्र बोलो।

पंडित : 'ओऽम थाली देवता प्रसन्न हो!' (दोनों हाथ जोड़कर आँखें बंद करते हैं) बोलो, क्या चाहिए?

पंडिताइन : अब इस थाली देवता से कहो कि हमारी पीठ पर एक-एक कोड़ा कसकर पड़े।

पंडित : अरे क्या कह रही हो भागवान? होश में तो हो?

पंडिताइन : बिलकुल होश में हूँ। अरे, जब हमें एक थाली पकवान मिला तो गाँववालों को दो-दो थाली मिला। अब जब हमें एक कोड़ा पड़ेगा, तब गाँववालों को दो-दो कोड़े पड़ेंगे।

पंडित : इससे तुम्हें क्या फ़ायदा होगा भागवान?

पंडिताइन : तुम तो निरे बुद्धू के बुद्धू ही हो, कुछ समझोगे नहीं। चलो माँगो ये वरदान!

पंडित : ठीक है बाबा। (आँखें मूँदकर दोनों हाथ जोड़ते हैं) हे थाली देवता! हमारी पीठ पर एक-एक कोड़ा कसकर पड़े। (दोनों एक साथ चीखते हैं, जैसे ज़ोर से कोड़ा पड़ा हो) हाय हाय ... मार डाला रे ... (चिल्लाते हुए दोनों का प्रस्थान)

दृश्य ग्यारह

('अंधों में काना राजा' की धुन पर थिरकते हुए सब आते हैं और गाँव के चौपाल का दृश्य बनाते हैं। अलग-अलग लोग अलग-अलग काम कर रहे हैं। इतने में एक व्यक्ति चिल्लाता है, जैसे उसे कोड़ा पड़ा हो। 'हाय हाय रे'। तभी फिर एक कोड़ा मारने के अहसास से ज़ोर से उछलता है - 'मार डाला रे'। अन्य लोग उसे देख हँसते हैं। मगर एक के बाद एक सभी व्यक्ति दो-दो कोड़े खाने से क्रमशः बिलबिलाने लगते हैं। सभी का तड़पते हुए मंच पर फैलना।)

व्यक्ति एक : ये क्या हो रहा है?
व्यक्ति दो : लगता है, गाँव पर भूत-प्रेत का साया पड़ गया है!
व्यक्ति तीन : लगता है, झाड़-फूँक, पूजा-पाठ कराना पड़ेगा।

(सबका कराहते हुए, एक-दूसरे का सहारा लेकर प्रस्थान)

दृश्य बारह

पंडिताइन : (बाहर देखते हुए) अभी तक ये लोग हमारे पास नहीं आ रहे हैं? इन्हें मज़ा चखाना ही होगा। (पुकारती है) अजी सुनते हो?
पंडित : (कराहते हुए आता है) अब क्या हो गया भागवान?
पंडिताइन : करामाती थाली लाओ।
पंडित : (थाली लेकर आता है) लो भागवान! अब तुम्हारी कौन सी इच्छा बच गई है?
पंडिताइन : मंत्र पढ़ो।
पंडित : (कराहते हुए) 'ओऽम थाली देवता प्रसन्न हो!' (दोनों हाथ जोड़कर आँखें बंद करते हैं) बोलो, अब क्या चाहिए?
पंडिताइन : थाली देवता से कहो कि इस बार हमें दो-दो कोड़े कसकर पड़ें।
पंडित : अरी भागवान! एक कोड़ा खाकर ही मेरी पीठ छिल गई है। अब दो कोड़े खाने की मेरी हिम्मत नहीं है।
पंडिताइन : अरे, गाँववालों को अपने सामने झुकाना है तो दो कोड़े खाने ही होंगे। चलो, माँगो वरदान।
पंडित : (लाचार होकर) हे थाली देवता! हमारी पीठ पर दो कोड़े कसकर पड़ें।

(दोनों दो कोड़े खाकर छटपटाने लगते हैं)

पंडित : मर गया रे ... पता नहीं किस घड़ी में तुझसे ब्याह किया है रे sss (दोनों का प्रस्थान)

दृश्य तेरह

(मंच दो हिस्सों में बँट जाता है। एक हिस्से में गाँववाले अलग-अलग समूहों में बैठकर एकदूसरे की पीठ सहला रहे हैं, सेंक रहे हैं, तेल-हल्दी लगा रहे हैं। इतने में सभी को चार-चार कोड़े पड़ते हैं। सब बारी-बारी से चार बार उछलते हैं। चीखने-चिल्लाने लगते हैं। चारों ओर चीख-पुकार मच जाती है)

व्यक्ति एक : ये क्या हो रहा है? पहले पकवान ... फिर सोने की मुहरें ... और अब ये कोड़े ... कुछ समझ नहीं आ रहा कि क्या जादू-टोना हो रहा है?

व्यक्ति दो : अरे भैया, मैं तो अब इस गाँव में नहीं रहूँगा। कहीं और जाकर कमा-खा लूँगा। हाय हाय!

(कराहते हुए चला जाता है। मंच के दूसरे हिस्से में पंडिताइन गुस्से से भरी चहलक़दमी कर रही है)

पंडिताइन : गाँववालों की ये मजाल? इतनी अकड़? इन्हें मज़ा चखाना ही होगा। अजी सुनते हो!

पंडित : (थाली लेकर प्रवेश) थाली लेकर ही आया हूँ भागवान! अब क्या माँगना है?

पंडिताइन : मंत्र पढ़ो।

पंडित : 'ओऽम थाली देवता प्रसन्न हो!' (हाथ जोड़कर आँखें बंद करता है) बोलो, क्या चाहिए?

पंडिताइन : थाली देवता से कहो कि हमारी एक आँख फूट जाए।

पंडित : अरे पंडिताइन, कुछ तो रहम करो। अरे भगवान ने हमें दो आँखें दी हैं, उनमें से तुम एक आँख छीन लेना चाहती हो? नहीं भई, मुझसे ये नहीं होगा।

पंडिताइन : अरे जब हमारी एक आँख फूटेगी, तो गाँववाले पूरे अंधे हो जाएँगे। तभी वे हमारी शरण में आएँगे।

पंडित : हम वैसे ही सुखी थे पंडिताइन। झूठी शान की ख़ातिर ऐसा करना ठीक नहीं है।

पंडिताइन : बेकार की बातें मत करो। मैं जो कहती हूँ, चुपचाप करो।

पंडित : (असहाय होकर) हे थाली देवता! हमारी एक आँख फूट जाए!

(दोनों की एक-एक आँख फूट जाती है। दोनों एकदूसरे को तिरछी नज़र से देखते हैं।)

पंडित : अब कलेजा ठंडा हो गया तुम्हारा?

पंडिताइन : अभी नहीं। चलो, चलकर गाँववालों का हालचाल देखें!

(दोनों मंच के दूसरे हिस्से में आते हैं। गाँववाले अंधे होकर एकदूसरे को पुकार रहे हैं, टटोल रहे हैं)

औरत एक : मुझे तो लगता है कि ये सब पंडिताइन का किया हुआ जादू है!

कई लोग एक साथ : चलो, पंडित-पंडिताइन के घर चलते हैं।

(पंडित की आवाज़ सुनाई देती है।)

पंडित : क्या हालचाल है भाइयों और बहनों?

(कोई देख नहीं पा रहा, इसलिए कोई भी किसी के भी पाँवों पर लोट जाता है। सब गुहार लगाने लगते हैं)

एक साथ : हमें बचा लीजिए ... हमारी आँखें वापस दिला दीजिए पंडित जी।

पंडिताइन : मैं तुम लोगों की आँखें ठीक कर सकती हूँ। मगर मेरी एक शर्त है।
एक साथ : क्या?
पंडिताइन : सब लोग हमें अपना राजा-रानी मानने को तैयार हों।
एक साथ : हाँ हाँ।
व्यक्ति दो : अरे वैसे भी अंधों में काना राजा ही होता है।
एक साथ : हाँ हाँ तैयार हैं।

(पंडित मंत्र पढ़ता है। थाली सामने रखकर कहता है - "हे थाली देवता! हमारी आँख वापस आ जाए!" सबको फिर से दिखने लगता है। सब लोग पंडित-पंडिताइन के पैरों पर गिर जाते हैं।)

एक साथ : आज से आप लोग ही हमारे राजा-रानी हैं! (सब एक साथ गाने लगते हैं)

अंधों में काना राजा अंधों में
अंधों में काना राजा अंधों में
अंधों में काना राजा अंधों में
अंधों में काना राजा
अंधों में काना राजा
काना राजा काना राजा
काना राजा काना राजा।

(सब एकसाथ एक पंक्ति में आकर झुककर तीन बार अभिवादन करते हैं)